बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बेहेड़ी

स्नातक द्वितीय खण्ड
हिंदी प्रतिष्ठा (तृतीय पत्र)

दिनांक - 18-8-2020

रामनारायण प्रसाद
अतिथि शिक्षक (हिंदी विभाग)

'अरी वरुणा की शान्त कछार' का भाव-सौन्दर्य

'अरी वरुणा की शांत कछार' जयशंकर प्रसाद के काव्य-संकलन 'लहर' में संकलित है। यहाँ बौद्ध-दर्शन का पूरा प्रभाव देखा जा सकता है। इसमें कवि ने मूलगंध कुटी विहार, सारनाथ की महिमा का वर्णन किया है। कवि प्रसाद केवल कल्पना के ही कवि नही हैं बल्कि भारतीय संस्कृति के महान उत्थापक भी हैं। भारत के इतिहास में वर्णित महात्मा बुद्ध की अमर-गाथा कौन नही जानता है। उन्हीं के प्रयास से भारत में सत्य, अहिंसा और त्याग का जयघोष हुआ।

मूलगंध कुटी विहार जैसे गौरवपूर्ण स्थल पर ही महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ उपदेश दिये थे, और अक्षय ज्ञान का साक्षात्कार किया था। इसलिए कवि ने वरुणा नदी की शान्त कछार की महिमा का गुणगान किया है, क्योंकि इसी तट के निकट सारनाथ में महात्मा बुद्ध ने अपने प्रथम उपदेश दिये थे और बौद्ध-धर्म का प्रचार किया था।

कवि कहते हैं कि 'हे वरुणा की शान्त कछारें, इस नश्वर संसार की सत्ता का श्रेय तुम्हें ही प्राप्त है क्योंकि तुम्हारे मध्य बैठकर ही तपस्वियों को दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है। इनके सत् प्रयास से ही सत्य का उद्घाटन होता है। यह संसार तो क्षणभंगुर है। तुम्हारे मध्य लताओं, वृक्षों और फूलों के समूह उपस्थित हैं जो कि तपस्वियों द्वारा की जाने वाली तपस्या के लिए अत्यंत अनुकूल वातावरण की सृष्टि करते हैं।

एक ऐसा भी समय था जब तुम्हारे आसपास की कुटियों में तपस्वीगण और साधक दर्शन, ईश्वर और अध्यात्म के गंभीर विषयों पर चिंतन-मनन करते थे।

Ajanta
Page No.
Date

तुम्हारे यहाँ ही एक बार स्वर्ग और धरती के मध्य ऐसी पवित्र सन्धि हुई थी कि उसका स्वर सारे संसार में गूंज उठा था। कवि के कहने का भाव यह है कि यह वही स्थल है जहाँ बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था और इस उपदेश का स्वर दिग्दिगंत में गूंजा था। विद्वान लोग विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों आदि को लेकर चर्चा किया करते थे। यही नहीं, देवताओं की उत्पत्ति विषयक प्रश्नों तथा स्वर्गीय सपनों पर यहीं संवाद हुआ करते थे। प्रकृति के इस सुन्दर वृक्ष-समूहों की छाया में विद्वतगण दर्शन के गहन तथ्यों पर विचार किया करते थे। यहाँ विद्वत्परिषदों द्वारा इस प्रश्न पर भी विचार किया जाता था कि ईश्वर की प्राप्ति बुद्धि अर्थात ज्ञान के बल पर हो सकती है अथवा प्रेम अर्थात हृदय की भक्ति-भावना से हो सकती है।

कवि पुनः वरुणा नदी की शान्त लहरों को सम्बोधित करते हुए कहता है कि "हे शान्त लहरों तुमने ही तथागत को वैराग्य के लिए प्रेरित किया था, इसलिए तुम्हारी महिमा निर्विवाद है।" कवि पुनः कहता है कि ~~हे~~ हे वरुणा के शान्त लहरों, तुम्हारे भीतर इतना अधिक आकर्षण है कि गौतम बुद्ध संसार के सभी सुख-ऐश्वर्यों को त्याग कर अपनी पत्नी का मोह छोड़कर तुम्हारे यहाँ आकर साधना में लीन हो गये थे। तभी उन्होंने संसार को नई दिशा प्रदान की। बुद्ध ने मानव मात्र को यह बताया कि "संसार में दुख आदि के उदय और नाश के मूल कारण मनुष्य के कर्म होते हैं। इन्हीं कर्मों के कारण मनुष्य सुखी होता है तथा इन्हीं कर्मों के कारण मनुष्य विविध प्रकार के दुखों से ग्रस्त हो जाता है।

बुद्ध का दिव्य संदेश यहीं से यहीं से सारे संसार में फैल गया।

रामनारायण प्रजापत।